Yashraj Nain

Head Boy,
The Scindia School,
The Fort, Gwalior-474 008 (M.P.)

परम आदरणीय मुख्य अतिथि सईदा इमाम जी, नन्हीं छाँव समाज सेवी संघ के संचालक श्री हरपाल सिंह जी, शहर से आए सभी वरिष्ठ सरकारी पदाधिकारी, विभिन्न विद्यालयों के प्राचार्य–शिक्षक, सिंधिया स्कूल के प्राचार्य श्री शमीक घोष जी, सौंसा ग्राम से आए सभी आगंतुक एवं उपस्थित सज्जनों । सर्वप्रथम मैं आप सबका हार्दिक स्वागत करता हूँ । आज बड़ा सौभाग्यपूर्ण अवसर है कि हमारे बीच श्रीमती सईदा इमाम जी के आतिथ्य में, नन्हीं छाँव संस्था के संचालक श्री हरपाल सिंह जी एवं उनके सभी सदस्य उपस्थित हैं ।

''मंदिर–मस्ज़िद गिरजाघर ने, बाँट लिया भगवान को ।

धरती बाँटी, सागर बाँटा, मत बाँटो इंसान को ।''

समाज को जागृत करने के लिए आज नन्हीं छाँव समाज सेवी संस्था महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, यह संस्था पंजाब, राजस्थान एवं दिल्ली में प्रशंसनीय सामाजिक कार्य कर लोगों को जागृत कर रही है । इस संस्था का मुख्य उद्देश्य भ्रूण हत्या एवं नारी शोषण जैसी कुरीतियों को समाप्त करना, पुत्री का सम्मान करना, उसके जन्म पर वृक्षारोपण करना, धर्म–निरपेक्षता तथा मानवता का संदेश देना है । सिंधिया स्कूल इस संस्था के इस संदेश को विभिन्न शिक्षण–संस्थाओं के माध्यम से मध्य प्रदेश के गावों तथा शहरों तक पहुँचाने के लिए दृढ़ संकल्प है । जिससे समाज को नारी–सम्मान एवं मानव–कल्याण की सीख मिल सके ।

समाज में मौजूद कई कुरीतियों की शिकार है भारतीय नारी । वह भारतीय नारी जो हमारी बेटी है, बहिन है, माँ है, दादी है और नानी है । जिस देश में नारी को देवी तथा शक्ति का प्रतीक माना जाता है उस देश में नारी का शोषण क्यों ? इस शोषण के विरुद्ध अनेक समाज सेवी संस्थाएँ अपनी आवाज़ बुलंद कर रही है । उनमें से एक अद्वितीय संस्था है, नन्हीं छाँव ।

किसी भी देश की सबसे बड़ी ताकत होती है उस देश की धर्म–निरपेक्षता । धर्म–निरपेक्षता वह ताकत है जो पूरे देश को ही नहीं बल्कि पूरे संसार को एकता के सूत्र में बाँध सकती है । धर्म–निरपेक्षता वह संजीवनी शक्ति है जो जाति, वर्ग, धर्म और संप्रदाय के बीच भेद–भावों को समाप्त कर एक आदर्श समाज एवं सुदृढ़ राष्ट्र का निर्माण करती है ।

नन्हीं छाँव शब्द शिशु एवं अंकुरित छोटे पौधे को परिभाषित करता है । जिस प्रकार एक पौधे की परवरिश करने पर वह विशाल वृक्ष का रूप धारण करता है, उसकी छाया में असंख्य जीव–जंतुओं को पनाह मिलती है और संपूर्ण पर्यावरण शुद्ध एवं सुगंधित होता है । उसी प्रकार बेटी की उचित परवरिश से वह आगे चलकर बहिन, माँ, दादी एवं नानी के रूप में समाज के समक्ष अटल खड़ी रहती है । नारी की ममता में वह शक्ति है जिससे समाज में प्रेम, सौहार्द, सहिष्णुता का वातावरण उत्पन्न हो जाता है । तो जहाँ एक ओर नन्हीं छाँव का एक रूप पर्यावरण की रक्षा और वहीं दूसरा रूप समाज की रक्षा करता है ।

हम सिंधिया स्कूल के छात्र शपथ ग्रहण करते हैं कि हम स्वयं दहेज न लेकर नारी की सुरक्षा एवं उसके विकास में सहयोग देकर उसका सम्मान करेंगे । नारी शोषण, बाल–विवाह एवं दहेज प्रथा के विरुद्ध शंखनाद करेंगे और शंखनाद कर सम्पूर्ण समाज को जागृत करेंगे ।

‘‘घरती अपनी, अम्बर अपना, हम धरती के लाल ।

नया संसार बनाएँगे हम, नय इंसान बनाएँगे ।’’